



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंक - 02

अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

प्रत्याषा

अक्टूबर-मार्च 2025

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
का कार्यालय, हैदराबाद

अमरा दीपम

तेलंगाना शहीद स्मारक जिसे तेलंगाना अमरा ज्योति/दीपम या अमरवीरुला स्तूपम भी कहा जाता है, 1969 में पृथक तेलंगाना राज्य के लिए हुए आंदोलन के दौरान शहीद हुए 369 छात्रों के स्मृति में बनाया गया एक स्मारक है। इसका आकार एक दिया एवं दीप जैसा है जो शहीद हुए छात्रों के स्मृति में समर्पित भावभीनी एवं गरिमामयी श्रद्धांजलि को दर्शाता है। यह तेलंगाना राज्य के नए सचिवालय के सामने स्थित है। यह विश्व में बना सबसे बड़ा सीमलेस स्टेनलेस स्टील से निर्मित स्मारक है और यह क्लाउड गेट, जो शिकागो में स्थित है, से पाँच गुना बड़ा है।

अमरा दीपम हुसैन सागर के तट पर स्थापित किया गया है। तेलंगाना शहीद स्मारक उन लोगों को श्रद्धांजलि देता है जिन्होंने राज्य के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। 1,600 टन स्टेनलेस स्टील से निर्मित, भव्य छह मंजिला संरचना एक दीर्घ वृत्ताकार मिट्टी के दीपक के आकार सा है। 177.5 करोड़ रुपये की लागत वाला यह स्मारक 3.29 एकड़ भूमि पर 26,800 वर्ग मीटर में फैला है और यह 45 मीटर ऊंचा है। अमरा दीपम का अनावरण बलिदानों की एक गरिमामई याद दिलाता है और यह भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। इसकी ऊंचाई एक तरफ 26 मीटर और दूसरी तरफ 18 मीटर है, जो जमीन से 45 मीटर की कुल ऊंचाई पर है।

इसकी छह मंजिलों का संक्षिप्त विवरण कुछ इस प्रकार है:-

बेसमेंट - 1:
1,06,993 वर्ग
फीट के क्षेत्र में
फैला यह तल
160 कारों

और 200 दोपहिया वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा प्रदान करता है।

बेसमेंट - 2: 1,06,993 वर्ग फीट के निर्मित क्षेत्र को कवर करते हुए, यह तल 175 कारों और 200 दोपहिया वाहनों के लिए पार्किंग की जगह प्रदान करता है। इसमें एक लाउंज क्षेत्र, लिफ्ट, लॉबी और 3 लाख लीटर की पानी की क्षमता वाला एक भूमिगत नाबदान भी है।

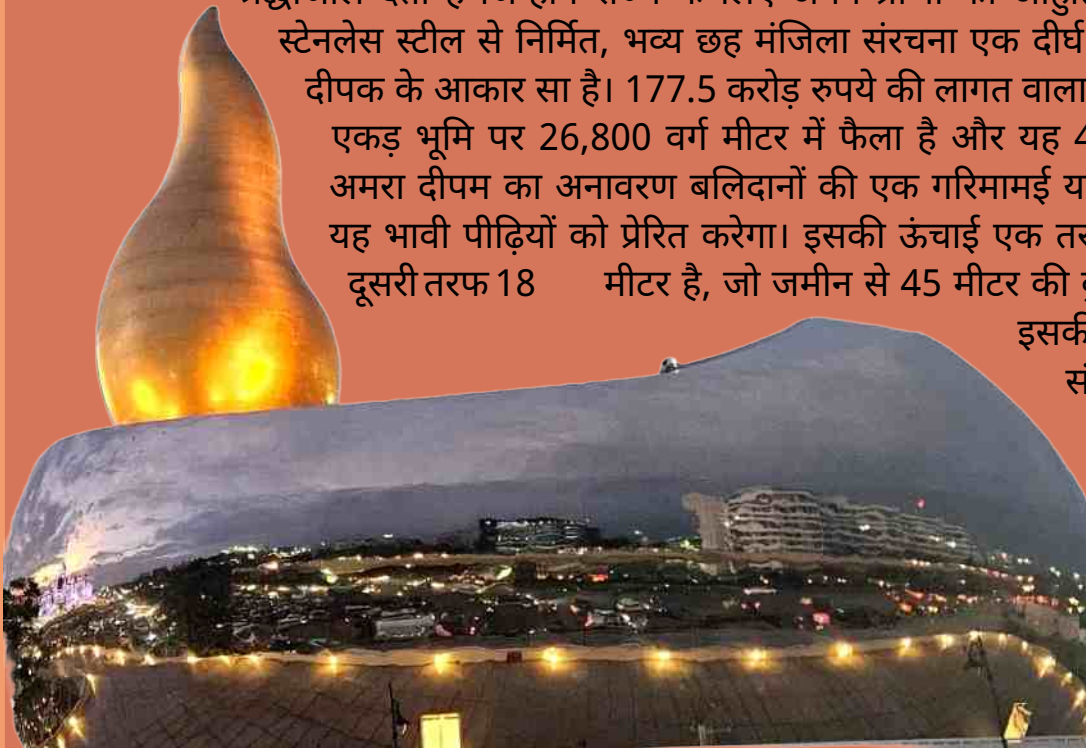
भूतल: 28,707 वर्ग फीट के क्षेत्र में फैला यह फ्लोर रखरखाव, सिविल और इलेक्ट्रिकल गतिविधियों को पूरा करता है।

प्रथम तल: 10,656 वर्ग फीट के क्षेत्र में फैले इस मंजिल में संग्रहालय, फोटो गैलरी और 70 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक ऑडियो-विजुअल कमरा है।

द्वितीय तल: 16,964 वर्ग फीट में फैले इस फ्लोर में एक कन्वेंशन हॉल और एक लॉबी क्षेत्र है।

तृतीय तल (छत): 8,095 वर्ग फीट के क्षेत्र में फैली इस मंजिल में बैठने की जगह, पेंट्री सेक्शन वाला एक रेस्तरां, एक व्यूपॉइंट और खुली छत पर बैठने की जगह है।

मेजेनाइन तल: 5,900 वर्ग फीट में फैली इस मंजिल में कांच की छत और एक ओवरहेड टैंक वाला एक रेस्तरां है।



अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

संदेश

पत्रिका परिवार एवं संपादकीय

1. क्षमा

03

2. उड़ान

04

3. किसका क्या महत्त्व है

05

4. खुदा

06

5. मौन नहीं रहना

11

6. भारतीय युवा श्रम शक्ति की मानसिकता

12

7. तुम और मैं

15

8. वर्षा

16

9. गहराइयों की कौन सुने

17

10. लड़की को लड़का क्यों बनना: लड़के को लड़का क्यों बनना

22

11. तमन्ना

23

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

12. हमको मंजूर था	24
13. ख्वाब	28
14. अभिमान	29
15. अशांत मन	30
16. जायकों का भारत	31
17. सच और झूठ	34
18. जीवन दर्शन	35
19. लघु कविताएं	36
20. हौसले	39

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं, पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से पत्रिका परिवार का सहमत होना जरूरी नहीं है। इस प्रकाशन में प्रयोग किए गए सभी चित्रों और जानकारियों के स्रोत का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। ये सभी सिर्फ ज्ञान बढ़ाने के हित के लिए प्रयोग किए गए हैं। किसी भी न्यायिक वाद के लिए न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद, तेलंगाना होगा।

संदेश



प्रिय पाठकों,

मुझे अपने कार्यालय की आंतरिक पत्रिका "प्रत्यूषा" का दूसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है। हिंदी हमारी राजभाषा है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम इसके प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयास करें तथा इसका अधिकतम प्रयोग करें।

कोई भी भाषा विचारों और भावनाओं को साझा करने का माध्यम होती है। "प्रत्यूषा" हमारे सहकर्मियों द्वारा लिखे गए लेखों का संग्रह है जो मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और विचारोत्तेजक हैं।

मुझे आशा है कि "प्रत्यूषा" का यह संस्करण हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के हमारे प्रयास में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। "प्रत्यूषा" के इस संस्करण पर आपकी प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतजार है। मैं "प्रत्यूषा" के इस संस्करण को सफलतापूर्वक प्रकाशित करने में सभी अधिकारियों और पदाधिकारियों के प्रयासों के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

वी. एम. वी. नवल किशोर
प्रधान निदेशक

संदेश



मुझे यह कहते हुए सुखद अनुभूति हो रही है कि हमारी राजभाषा पत्रिका "प्रत्यूषा" के द्वितीय अंक के प्रकाशन के माध्यम से फिर से आप सब तक पहुँचने का अवसर मिल पाया है। मैं इस प्रयास में शामिल हर सदस्य को हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। यह अंक इस बात का प्रमाण है कि हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और उसे समृद्ध बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि हम अपने कार्यस्थल पर राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को निरंतर बढ़ा रहे हैं। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम दैनंदिन कार्यों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें।

अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्यों तथा इस पत्रिका में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुनः धन्यवाद देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

के. रघु कुमार

के. रघु कुमार
उप निदेशक

संदेश



राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के सार्थक प्रयास के क्रम में इस कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' का दूसरा अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है। मैं उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान किया है। इन रचनाओं के कलमकारों का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

वास्तव में इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के काम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना है। राजभाषा हिंदी के विकास में यह एक छोटा-सा किंतु हमारे लिए महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय का दर्पण है एवं मैं आश्वस्त हूँ कि यह हिंदी के प्रचार-प्रसार के अपने उद्देश्य में निश्चित रूप से सफल सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

बिनायक मजूमदार

बिनायक मजूमदार

उप निदेशक

प्रधान संपादक की कलम से



प्रिय साथियों,

सर्वप्रथम, हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ। यह अंक हमारे सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा दें और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सक्रिय योगदान दें।

हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। हिन्दी पत्रिकाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होती हैं, क्योंकि इनसे न केवल कार्यालय के सभी सदस्य एक - दूसरे से जुड़े रहते हैं, बल्कि हिंदी में संवाद की क्षमता भी विकसित होती है। हम जितना अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे, उतना ही हम इसे समृद्ध और प्रभावी बना सकते हैं। प्रत्यूषा का हर अंक इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान है। हम सभी का उद्देश्य यही होना चाहिए कि हम अपनी राजभाषा को समृद्ध करें और उसकी प्रगति हेतु आवश्यक कदम उठाएँ।

आशा है कि प्रत्यूषा का यह अंक आपके लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा। आपके सुझाव, समर्थन और प्रतिक्रियाओं से हम भविष्य में और भी बेहतर अंक प्रकाशित करने में सफल होंगे।

धन्यवाद।

के. मेहेर प्रसाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकाशक

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय,
हैदराबाद

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री वी.एम.वी. नवल किशोर,
प्रधान निदेशक

परामर्शदाता

श्री के. रघु कुमार, उप निदेशक
श्री बिनायक मजूमदार,
उप निदेशक

प्रधान संपादक

श्री के. मेहेर प्रसाद,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्र.)

संपादक

श्री एन. शिवा कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्र.)

सम्पादन सहयोगी

- श्री राहुल कुमार,
वरिष्ठ अनुवादक
- सुश्री सिम्मी साव,
कनिष्ठ अनुवादक
- श्री विवेक कुमार सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक
- श्री शशि किशोर राम,
कनिष्ठ अनुवादक

क्रेडिट

- मुख्य पृष्ठ फोटो
श्री रोहित कुमार, लेखापरीक्षक



संपादक की कलम से

इस कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रत्यूषा' का दूसरा अंक आपके समक्ष रखते हुए बहुत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिंदी आम जनमानस को जोड़ने वाली भाषा के साथ-साथ भारत की बहुभाषिक संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने का भी कार्य करती है। राजभाषा हिंदी संवाद का एक महत्वपूर्ण और मज़बूत स्तम्भ बनकर वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाते हुए आगे बढ़ रही है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव का विषय है।

हिंदी एक सरल भाषा है लेकिन इसके बावजूद इसका कार्यालयीन कामकाज में इस्तेमाल करते समय कई अधिकारी कठिनाईयां महसूस करते हैं। इन कठिनाईयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशाला का नियमित अंतराल में आयोजन किया जाता है। सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना न केवल हम सभी का दायित्व है अपितु यह एक संवैधानिक अपेक्षा भी है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि सभी पाठकों का स्नेह भी हमारी पत्रिका "प्रत्यूषा" को सदैव मिलता रहेगा और पत्रिका पर आपकी प्रतिक्रियाएं हमें हमेशा की तरह प्रेरणा देने के साथ-साथ ही हमारा मार्गदर्शन भी करती रहेंगी।

शुभकामनाओं सहित।

शिवा कुमार

एन. शिवा कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सुश्री प्रीति
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

क्षमा

क्षमा मनुष्य के जीवन का अद्भुत गुण है। यदि मानवजाति क्षमाविहीन आचरण धारण करे तो पृथ्वी पर अराजकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा।

क्षमा तेजस्वियों का तेज है, क्षमा तपस्वियों का तप है, सत्यवादियों का सत्य है, क्षमा परोपकार व संयम है। क्षमा ही यश, दान, परोपकार, मन का संयम, अहिंसा, धर्म और इन्द्रियों का नियंत्रण है। क्षमा से ही दया, परोपकार, देवत्व और परमेश्वर्य की प्राप्ति होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी में एक अद्भुत क्षमामूर्ति महर्षि दयानंद सरस्वती जी थे जिन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग 16 बार विषपान किया। अनेकों बार राष्ट्र एवं मानवता की उन्नति के लिए तथा धर्म की पुनः स्थापना हेतु एवं सत्य ज्ञान के प्रचार के लिए अपमानों का सामना किया। जोधपुर महल के भोजन में विष मिलाकर देने वाले जगन्नाथ के विषय में ज्ञात होने के पश्चात भी क्षमा के साथ उसे जीवन और अभयदान दिया। अतः महर्षि का जीवन अद्भुत क्षमामय था।

क्षमाविहीन मनुष्य न तो अपने मस्तिष्क और अपने हृदय में शांति स्थापित कर सकता है और न ही संसार में शांति का साम्राज्य ला सकता है।

अतः दिव्यगुणयुक्त क्षमा के द्वारा ही गृह युद्ध, अराजकता व अशांति का निराकरण किया जा सकता है।

गलती करना मानवोचित है, क्षमा कर देना देवोचित है। इसका अद्भुत प्रयोग हमेशा महात्मा गाँधीजी के अहिंसा नीति एवं आदर्शों का अनुसरण करने वाले साउथ अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला से सीखना चाहिए। श्री नेल्सन मंडेला जी ने राष्ट्रपति बनने के उपलक्ष्य में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में पेर्सी यूलर (Percy Yular) को बुलाया जिसने एक मुकदमे के दौरान मंडेला जी को फांसी देने की मांग की थी।

इन सब गुणों से यह स्पष्ट होता है, कि 'क्षमा' के गुण से श्री मंडेला को जीवन में उच्च स्थान प्राप्त हुआ। क्षमाशील व्यक्ति वही हो सकता है जो आंतरिक ऊर्जा से भरपूर हो। आंतरिक ऊर्जा से विहीन मनुष्य क्षमारूपी गुणों से अभिभूत नहीं हो सकता क्योंकि वह अपने मन व मस्तिष्क में अशांति व हृदय में तनाव का वातावरण महसूस करता है।

निर्बल इंसानों पर दया करना
और उनको क्षमा करना ही
मनुष्य का निजी गुण होता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती



उड़ान



श्री अर्जुन दत्ता
लेखापरीक्षक

जिन्दगी के मंच में मैं अपना संगीत बुनता हूँ।
सात सुरों से मेरी ताकत, जिसका मैं सवेरा हूँ।
हर कदम के साथ, मैं भव्यता में नाचता हूँ।
चुनौतियों को गले लगाकर, हार नहीं मानता हूँ।

घाटियों से होते हुए, पहाड़ों के ऊपर।
मैं पंख फैलाकर आसमान को छूता हूँ।
साहस मेरे मार्गदर्शक, सितारों के रूप में।
चाहे कितना भी दूर हो, मैं आगे बढ़ता हूँ।

मुश्किलें आती रहती हैं, जैसे रात में एक तूफान।
लेकिन मैं अँधेरी रात में, एक दृढ़ प्रकाश हूँ।
मैं ऊपर उठता हूँ, अटूट शक्ति के साथ।
क्योंकि मैं अपनी क्षमताओं में अपनी उड़ान भरता हूँ।

संभावनाओं के बगीचे में, मैं बीज बोता हूँ।
सपनों को पोषित करके, अपनी ज़रूरतें पूरी करता हूँ।
दृढ़ता मेरे मार्गदर्शक सितारों की तरह।
मैं चुनौतियों का सामना करके आगे बढ़ता हूँ।

मेरी उड़ान की गीत को गूँजने दो, मधुर स्वर की तरह।
मेरी क्षमताओं का गीत काफी है, जंजीरें तोड़ने के लिए।
मेरे हृदय में एक अजीब अंतर्निहित शक्ति बसी है।
असंभव को गले लगाकर, सामान्यता से मुक्त होने के लिए।



श्री संदीप कश्यप
लेखापरीक्षक

फिसका क्या महत्त्व है

पढ़ाने में गुरु का, पाठ के शुरु का, तारों में ध्रुव का बहुत बड़ा महत्त्व है।
लगाने में सैन्ट का, पहनने में पैंट का, शादी में टैन्ट का बहुत बड़ा महत्त्व है।
बातों में इशारों का, आकाश में तारों का, बुढ़ापे में सहारे का बहुत बड़ा महत्त्व है।
सर्दी में रजाई का, बीमारी में दवाई का, दूध में मलाई का बहुत बड़ा महत्त्व है।
बाग में माली का, रास्ते में नाली का, त्योहारों में दीवाली का बहुत बड़ा महत्त्व है।
बर्तन में थाली का, तालों में ताली का, रिश्ते में साली का बहुत बड़ा महत्त्व है।
चलाने में तीरों का, आभूषण में हीरों का, गणित में जीरो का बहुत बड़ा महत्त्व है।
श्वास में हवा का, बीमारी में दवा का, केस में गवाह का बहुत बड़ा महत्त्व है।
भारत में रेल का, क्रिकेट के खेल का, थानों में जेल का बहुत बड़ा महत्त्व है।
पीने में पानी का, जिंदगी में जवानी का, सुनने में कहानी का बहुत बड़ा महत्त्व है।
पहनने में सूट का, रेगिस्तान में ऊँट का, राजनीति में झूठ का बहुत बड़ा महत्त्व है।
मैसेज में चैट का, क्रिकेट में बैट का, मोबाइल में नेट का बहुत बड़ा महत्त्व है।
चोर में चिंदी का, शृंगार में बिंदी का, भाषा में हिंदी का बहुत बड़ा महत्त्व है।
सुबह के रवि का, लिखने में कवि का, पढ़ने में सभी का बहुत बड़ा महत्त्व है।

कविता

खुदा



सुश्री विधि उज्जैनियाँ
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

कहते हैं ऊपरवाले ने ये जिन्दगी बनाई,
फिर उसी ऊपरवाले के नाम पर इस पर बंदिशे
बना रखे हैं नियम कानून नाम पर उसके अनेक
उस खुदा के लिए तो सब कुछ है एक।
उसने बस बनाया इन्सान और दी इंसानियत,
बनाकर खुद को हैवान बना दी उसे हैवानियत

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह की कुछ झलकियां



तत्कालीन महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा श्री एम. एस. सुब्रह्मण्यम का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए तत्कालीन निदेशक महोदय श्री आ. पावैतन (बाएं से दाएं)



उप निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा श्री बिनायक मजूमदार का पुष्पगुच्छ से स्वागत करती हुई सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती प्रियंका चौरसिया

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह की कुछ झलकियां



उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए तत्कालीन महानिदेशक महोदय



हिन्दी पत्रिका 'प्रत्यूष' के प्रथम अंक का विमोचन करते हुए तत्कालीन महानिदेशक महोदय

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह में तत्कालीन महानिदेशक महोदय से पारितोषिक ग्रहण करते हुए तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता के विजेता



प्रथम पुरस्कार (हिन्दी भाषी) श्रीमती रचना गुप्ता, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



द्वितीय पुरस्कार (हिन्दी भाषी) श्री अजित कुमार झा, लेखापरीक्षक



प्रथम पुरस्कार (हिन्दीतर भाषी) श्री अर्जुन दत्ता, लेखापरीक्षक



तृतीय पुरस्कार (हिन्दीतर भाषी) श्री प्रबीण कुमार नायक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिन्दी पखवाड़ा 2024 में रंगोली प्रतियोगिता के दौरान बनाई गई कुछ रंगोलियाँ



कलाकार - श्रीमती के. स्वर्णा



कलाकार - सुश्री एन. श्वेता



कलाकार - श्रीमती प्रियंका चौरसिया



कलाकार - श्रीमती ए. वरलक्ष्मी

कविता

मौन नहीं रहना



सुश्री सिम्मी साव
क. अनुवादक

अब नहीं दबना मुझको
अब नहीं सहना मुझको
कितनी भी हो यातनाएँ
अब मौन नहीं रहना मुझको

जीवन के हर पथ पर
अपने आत्मसम्मान को बचाना है
संघर्षरत रहकर
दृढ़ संकल्प के साथ
अपने अस्तित्व को बनाए रखना है॥

चाहे खाना बनाना हो या
जहाज उड़ाना
या हो देश की रक्षा
के लिए दुश्मनों से लोहा लेना॥

आज हर कर्म-क्षेत्र में
अपने सामर्थ्य को सिद्ध कर दिखाया है
देश ही नहीं दुनिया में
अपने अस्तित्व का परचम लहराया है॥

मौन को चुप्पी न समझो मेरी
यह तलवार नहीं
कलम की धार है
यह आसानी से भर जाये
ऐसे घाव नहीं
यह नमक मिश्रित
रक्त की धार है॥



श्री अर्जुन दत्ता
लेखापरीक्षक

भारतीय युवा श्रम शक्ति की मानसिकता

भारत एक अद्वितीय और विविधतापूर्ण देश है जो अपनी समृद्धि, सांस्कृतिक धरोहर और भौतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय युवा श्रम शक्ति की गतिविधियों में एक परिवर्तनात्मक रुझान नज़र आया है। युवाओं की मानसिकता को परंपरागत मूल्यों और प्रगतिशील दृष्टिकोण के मिश्रण के तौर पर चित्रित किया जा सकता है, जो देश के वैश्वीकरण और आर्थिक विकास की ओर बढ़ने का परिचय देता है।

हमारे युवा उनके चयनित क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने की उच्च आकांक्षा और इच्छा रखते हैं। देश की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था की वृद्धि के साथ युवा पेशवरों को अपनी विशेषज्ञता तय करने की उत्सुकता है। मगर कुछ युवाओं में नौकरी के अधिकार की भावना होती है। अधिकांश युवा नौकरी के प्रति अधिक अपेक्षा रखते हैं। इससे नवीनता की ओर रुचि कम हो जाती है और सामाजिक आदर्शों की तुलना में व्यक्ति जॉब सिक्योरिटी को प्राथमिकता बना लेता है।

भारतीय युवा श्रम शक्ति में उद्यमिता की भावना देखी जाती है। सरकार भी अब नए स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन दे रही है जिसके फलस्वरूप कई युवा पारंपरिक करियर से हटके उद्यमिता के दिशा में कदम रख रहे हैं। मगर कुछ प्रतिशत भारतीय युवा अक्सर अपनी स्थिति को लेकर नकारात्मक मानसिकता बनाए रखते हैं। ग्लोबल उद्यमी संस्कृति की ओर रुझान होने के बावजूद, भारत की युवा श्रम शक्ति अभी भी असफलता के चिह्नों के साथ निर्बंध है। सामाजिक राय से बचने का भय अक्सर व्यक्ति को जोखिम लेने से रोकता है जिससे रचनात्मकता और व्यावसायिकता दोनों पर दबाव बनता है।

भारत की युवा श्रम शक्ति में एक वैश्विक दृष्टिकोण है जिसके कारण अंतर्राष्ट्रीय संस्कृतिकरण और वैश्विक संवाद

के बढ़ने का सामर्थ्य है। वैश्वीकरण ने युवा श्रमिकों में विचारशीलता और उत्प्रेरणा की भवना को बढ़ाया है। युवा नए विचारों को स्वीकार कर रहे हैं। इससे हमारे युवा वैश्विक समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। हमारे युवा नए और अनुसंधान योग्य विचारों के साथ उत्पाद और सेवाओं को विकसित करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। इससे वे विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं और प्रगति की नई ऊँचाइयों को छू रहे हैं।

वर्तमान समय के युवा वर्ग की मेहनती मानसिकता में वृद्धि हो रही है। आजकल तकनीकी उन्नति और शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि के कारण एक नई सोच का उत्थान हो रहा है। पिछली पीढ़ी में जीवन की प्रमुखता आधारहीन थी और लोगों को समस्याओं का सामना करने के लिए आत्मनिर्भरता की आवश्यकता थी। वे लोग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दबावों के बावजूद भी संघर्षरत थे। अतः आज की पीढ़ी की मानसिकता और पिछली पीढ़ियों की मानसिकता में अंतर है, लेकिन दोनों में ही अपनी विशेषताएँ हैं। पिछली पीढ़ियाँ अधिकतम संघर्षों और अधिकारों के लिए लड़ी थीं जबकि आज की पीढ़ी नई तकनीकी साधनों का उपयोग करके अपने लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। हमें इस विकास के साथ एक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है ताकि हम समाज को एक उत्तम भविष्य की दिशा दे पाएं।

निष्कर्ष के तौर पर, भारत की युवा श्रम शक्ति की मानसिकता गतिशील है और वैश्विक मंच पर भारत के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज के युवाओं के परिश्रम से ही उत्पादन बढ़ रहा है और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है। श्रमिक वर्ग समाज की नींव है और मेहनती श्रमिक वर्ग एक राष्ट्र को और भी सशक्त और समृद्ध बनाने में अहम भूमिका निभाता है। हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में हमारी युवा श्रम शक्ति भारत को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सफल होगी।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गए निरीक्षण से संबंधित कुछ झलकियां



कार्यालय का स्टॉल



स्टॉल पर उपस्थित तत्कालीन निदेशक महोदय श्री आ. पावेंतन, तत्कालीन महानिदेशक महोदय सुश्री सी. सैलजा (बाएं से दाएं) एवं स्टॉल का निरीक्षण करते हुए माननीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब (सबसे दाएं)

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गए निरीक्षण से संबंधित कुछ झलकियां



स्टॉल का निरीक्षण करते हुए माननीय समिति के सदस्य



माननीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब से प्रमाण-पत्र प्राप्त करती हुई तत्कालीन महानिदेशक महोदय सुश्री सी. सैलजा

तुम और मैं



श्री विवेक कुमार सिंह
क. अनुवादक

तुम छोटे बालों की दीवानी
मैं चोटी करने वाला अघोरी प्रिये।
तुम ट्रिम्ड बियर्ड पे मरती हो
मैं अल्हड़ मुच्छड़ प्रिये।
तुम ब्रह्मा की वृहद लेखनी
मैं बिब्लियोफाइल प्रिये।
तुम सोची समझी साज़िश जैसी
मैं बेधड़क बेबाक प्रिये।
तुम देख-देख के चलती हो
मैं बस बढ़ता जाता प्रिये।
तुम झील-सी शांत हो
मैं नदियों की कलकल धारा प्रिये।
तुम बात-बात पे समझाती हो
मैं हर बात टालता चलता प्रिये।
तुम आँखों में आँखें डाल बतियाती
तो मैं नज़रें चुराता फिरता प्रिये।
तुम सावन की मूसलाधार बारिश हो
और मैं इंतज़ार करता धरा प्रिये।
तुम बादलों की जमघट हो
तो मैं खुश होता मोर प्रिये।



सुश्री प्रीति
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्षा

धरती की प्यास बुझाती है वर्षा
मन हर्षित कर जाती है वर्षा
पंछियों की चंचलता लौटाती है वर्षा
प्रकृति को निखारती है वर्षा
बूंदों में छिपा है जीवन का रहस्य
हर बूँद के साथ विजयी सन्देश लेकर आती है वर्षा
धरा को सन्मार्ग पर लाती है वर्षा
अपनी राह में नया सफ़र सिखाती है वर्षा
पत्तों को सहला कर बूंदों से
मधुर गीत सुनाती है वर्षा
खेतों में श्रम करते कृषक के
दुखों को हर जाती है वर्षा
जीवों की तृष्णा मिटाने को
नदियों को भर जाती है वर्षा
वन में मयूर संग पंख फैलाकर
मोहक नृत्य दिखाती है वर्षा
ग्रीष्म में तपते मरुस्थल में
जीवन अंकुरित कर जाती है वर्षा
आयु का बंधन न रह जाता
हर डर आनंदित कर जाती है वर्षा
निज न्यौछावर कर देना ही जीवन है
यही ज्ञान सिखाती है वर्षा

गहराईयों की कौन सुने



श्री शशि किशोर राम
क. अनुवादक

गहराईयों की कौन सुने
जब लहरे उठती हैं तो दिखती हैं
लापरवाहियों पर किसने ध्यान दिया
हादसे होते हैं तो मुद्दे उठते हैं
खामोशियों को कौन समझे
शोर होता है तो लोग जागते हैं
नमी नहीं पढ़ पाते हैं वो आँखों के
जब आँसू गिरते हैं तब वे ज़रा ठहरते हैं
आवाज़ दे दो चाहे जितनी भी
जब आप ठहरते हैं तब वे कहीं पीछे मुड़ कर देखते हैं
दुनिया बदल गई है साहब
लोग दिन में सोते हैं और रात को जागते हैं
सच तो कहीं है ही नहीं जनाब
झूठ-झूठ को प्रमाण दे रहा है
और हम सत्य-विजय की राह देखते हैं।

ऑडिट सप्ताह 2024 के उद्घाटन समारोह की कुछ झलकियां



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रकाशनों एवं प्रतिवेदनों की प्रदर्शनी



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रकाशनों एवं प्रतिवेदनों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए प्रधान निदेशक महोदय श्री वी. एम. वी. नवल किशोर

ऑडिट सप्ताह 2024 के उद्घाटन समारोह की कुछ झलकियां



दूरदर्शन को साक्षात्कार देते हुए प्रधान निदेशक महोदय



उद्घाटन समारोह के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए प्रधान निदेशक महोदय

ऑडिट सप्ताह 2024 के समापन समारोह की कुछ झलकियां



प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा श्री वी. एम. वी. नवल किशोर एवं सेवानिवृत्त महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा श्री एम. एस. सुब्रह्मण्यम (बाएं से दाएं)



दर्शकों को संबोधित करते हुए तेलंगाना राज्य के माननीय राज्यपाल श्री जिशन देव वर्मा एवं मंच पर आसीन महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख

ऑडिट सप्ताह 2024 के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान नृत्य प्रस्तुत करती हुई कार्यालय परिसर में स्थित कार्यालयों में कार्यरत महिला कर्मचारीगण



युगल गीत प्रस्तुत करते हुए सहायक पर्यवेक्षक श्री के. मधुकर एवं सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती प्रियंका चौरसिया



श्री संदीप सिंह
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

लड़की को क्यों लड़का बनना: लड़के को लड़की क्यों बनना

जो जैसा है उसके वैसा ही होने में उसकी सुंदरता है, प्रकृति की रचना को बदलने की कोशिश करना प्रकृति की अवहेलना है। यह पंगु मानसिकता का परिचायक है, जिस पर स्वार्थ और जटिल हीनता ही हावी है। यह एक तरह का आंतरिक अधूरापन और प्रकृति के साथ असामंजस्य ही है।

हमारे समाज में ऐसी अवधारणा बन गई है कि जो जैसा है उसको उस रूप में स्वीकार ही नहीं करना है। आप आम घरों में चले जाइए, वो अपनी बेटी को बेटा और बहू को बेटी जैसे शब्दों से बुलाते हैं उनको यह बात समझ में ही नहीं आती कि सभी रिश्तों के नाम में ही एक मूल्य रेखांकित है। स्टील को मांज कर चांदी नहीं किया जा सकता, लोहे को मांज कर स्टील नहीं किया जा सकता।

आज कल आप को बहुत-सी लड़कियाँ मिल जायेंगी जो खुद को पुरुषवाचक शब्दों से संबोधित करती हैं और ऐसी लड़कियाँ जो बहुत छोटी हैं, जैसे मैं खाऊंगा, मैं जाऊंगा पापा, मैं खेलूंगा इत्यादि

और यह बहुत-सी लड़कियों में बचपन से ही उनके व्यक्तित्व के विकास पर दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव छोड़ता है। लड़की इस मध्य लिंग संरचना में फंस गई है जहाँ वह न तो पूरी तरह से महिला है और न ही पुरुष और उनके पेरेंट्स इस बात पर टोकते भी नहीं हैं कि तू महिला है तूझे क्यों पुरुष बनना है।



प्रकृति की रचना को बदलने की कोशिश करना प्रकृति की अवहेलना है। यह पंगु मानसिकता का परिचायक है, जिस पर स्वार्थ और जटिल हीनता ही हावी है।

महिला होना उतना ही खूबसूरत है जितना पुरुष होना। पर ऐसे माँ-बाप को वास्तव में लड़का ही चाहिए था और तो और वही पेरेंट्स आप को कहते मिल जाएंगे कि हम अपनी लड़कियों को लड़कों की तरह पालते हैं। तो यह बात जान लीजिए कि उन्हें वास्तव

में “लड़का” ही चाहिए था मगर गलती से उनके यहाँ लड़की पैदा हो गई। अब वो बाहर से मज़बूत दिखने के लिए और खुद को संतुष्ट करने के लिए ऐसा कहने लगते हैं।

अगर उनका लड़का एक बार खुद को महिला वाचक शब्दों से संबोधित कर दे तो तुरंत उसको टोक देंगे और पूरी मजबूती के साथ रोकेंगे।

बेटियों को बेटी की तरह पालिए। औरत होना बहुत खूबसूरत है। औरत के औरत होने में ही खूबसूरती है.. आप इसे स्वीकारिए.. अपनी बेटी को यह बताइए कि बेटी होना उतना ही अच्छा है जितना बेटा होना.. मैं करूँगी, मैं कहूँगी, मैं जाऊँगी ऐसे सुंदर स्त्रीवाचक शब्द हैं जिसे पुरुष नहीं बोल सकता है.. ये आपके लिए हैं और बहुत सुंदर हैं..

कविता

तमन्ना



श्री संदीप कश्यप

अपने हिस्से के आसमान को पाने निकला हूँ
अपने हर ख्वाब को हकीकत बनाने निकला हूँ
इस दुनिया में एक हमदर्द नहीं मिलता,
मैं हमदर्दों की पूरी दुनिया बसाने निकला हूँ
ना मौत का खौफ है ना किस्मत की फिक्र,
मैं तूफान में एक समा जलाने निकला हूँ
सारी दुनिया सठी है तो सठी रहे मुझसे,
मैं अपने मुकद्दर को मनाने निकला हूँ।

ग़ज़ल

हमको मंजूर था



श्री संदीप कश्यप

हमको मंजूर था लख्म खाते रहें,
दोस्तों को मगर आजमाते रहें।
वो बुझाते रहे उनको यह शौक था,
हमको यह शौक था हम जलाते रहें।
मौसमों की नज़र से रहे बेख़बर ,
फूल जब तक रहे मुस्कुराते रहे।
हमने हाज़िर किए दर्द तो क्या मिला,
तुमने अच्छा किया तुम छिपाते रहे।
कोई रिश्ता तो तुमने बनाए रखा,
चाहे दुश्मन समझ कर निभाते रहे।
जो ग़ज़ल हो गए वो अलग बात है,
दर्द थे जिन्हें हम गुनगुनाते रहे।

76 वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए प्रधान निदेशक महोदय श्री वी. एम. वी. नवल किशोर



राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को सलामी देते हुए एवं दर्शकों को संबोधित करते हुए प्रधान निदेशक महोदय

76 वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



मंचासीन महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा, महानिदेशक आर.सी.बी. & के.आई. सुश्री सी. सैलजा, प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा श्री वी. एम. वी. नवल किशोर, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्रीमती चन्दा पंडित एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्रीमती पी. माधवी



दर्शक दीर्घा में उपस्थित कार्यालय परिसर के उच्च अधिकारी, अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी

76 वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को सम्मानित करते अधिकारीगण



महानिदेशक क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, हैदराबाद सुश्री सी. सैलजा के करकमलों से उत्कृष्ट गायन हेतु सम्मान प्राप्त करती हुई सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती प्रियंका चौरसिया (बाएं से दाएं)



महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) सुश्री हेमा मुनिवेंकटरा के करकमलों से उत्कृष्ट गायन हेतु सम्मान प्राप्त करते हुए लेखापरीक्षक श्री संदीप करयण (दाएं से बाएं)



वरिष्ठ उप महालेखाकार श्री राकेश सी. सण्जन के करकमलों से उत्कृष्ट गायन हेतु सम्मान प्राप्त करते हुए सहायक पर्यवेक्षक श्री के. मधुकर (दाएं से बाएं)

कविता

ख्वाब



सुश्री विधि उज्जैनियाँ

मेरे वक्त को भी वक्त लगता है
वक्त के साथ वक्त को बदलने में।
मेरी किस्मत को भी किस्मत लगती है
किस्मत के साथ किस्मत को बदलने में।
मेरी दुआ को भी दुआ लगती है
दुआ के साथ दुआ कुबूल होने में।
मेरी हकीकत को भी हकीकत का प्रमाण लगता है
उस हकीकत को हकीकत होने में।
मेरे ख्वाबों को भी ख्वाब लगते हैं जिन ख्वाबों में संघर्ष होता है
उन ख्वाबों को साकार होने में।

कविता

अभिमान



श्री संदीप सिंह

क्या यह प्रतिष्ठा भी अभिमानी है
क्या यह भी बारीकी से निर्मित है ।
क्या हम इतने भोले और अज्ञानी हैं
हर इच्छा एवं महत्त्वकांक्षा भी अभिमानी है ॥
वह जीवन हम कब जिएंगे, जिसमें प्रीत की ठन्डी ऊर्जा हो ।
न कुछ पाने का लालच, न कुछ खोने का भय हो॥
हर अभिमानी अभिलाषा आगामी है।
क्यों न चुने कुछ ऐसा जिसमें सब निर्वाही हो॥
इस अर्धसत्य में कब तक ठहरूँ, रुकूँ ।
क्यों न मोक्ष पाकर आकाश में उपलब्ध हो जाऊँ ॥
इस झूठी प्रतिष्ठा में, प्रेम ही परहेज़ है ।
खुद से विरक्त, परिजन से अतिदूर है ॥
तुलन पत्र में ध्यान से देखो, पाया खोया सब इंगित है।
अमूर्त, अधूरा, भय, लालच ही रेखांकित है॥
इस प्रतिष्ठा से पर जाकर, अलगाव की चेतना पर जाओ ।
पहले ही लिखी हुई अपनी हालत छोड़कर, एक नई ताज़ी जिंदगी बनाओ ॥

अशांत मन



श्री अर्जुन दत्ता

हंस अपनी हंसिनी को खोजेगा,
सारस नदी किनारे मछली को पाएगा
अँधेरी रातें बारिश में सफ़ेद हो जायेंगी
घने जंगल में मोर नाचेगा
प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलेंगे, भरोसा रखो
लेकिन शांति हाय शांति नहीं मिलेगी।।
एकांत यात्री अपने घर की ओर लौटेगा
खोखले कुंड की गहराई में, बिना थमे
भूले हुए पुराने गीतों के शब्द
आपकी आवाज से वापस आएंगे
प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलेंगे भरोसा रखो
लेकिन शांति, हाय शांति नहीं मिलेगी
चिड़ियों का चहचहाना रुक जाएगा
भूखे शेर को नीलगाय मिलेगी
गाँव की हवाओं में मिठास आएगी
संगीत से दिल को सुकून मिलेगा
प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलेंगे, भरोसा रखो
लेकिन शांति हाय शांति नहीं मिलेगी।।

ज़ायकों का भारत



श्री विवेक कुमार सिंह
क. अनुवादक

भारत, एक विविधतापूर्ण देश है जो अपने अंदर न केवल सांस्कृतिक विविधताओं का खजाना समेटे हुए है, बल्कि यहाँ के विभिन्न राज्यों के व्यंजन भी इस समृद्धि को दर्शाते हैं।

प्रत्येक राज्य का खाना अपनी भौगोलिक स्थिति, जलवायु, ऐतिहासिक प्रभाव और स्थानीय संसाधनों से प्रेरित होता है। उत्तर भारत में जहाँ घी, दही और मसालों का प्रमुख स्थान है, वहीं दक्षिण भारत में चावल, नारियल और उबले हुए व्यंजन ज्यादा प्रचलित हैं। मध्य भारत में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह के व्यंजन समान रूप से लोकप्रिय हैं, जबकि पश्चिमी भारत खासकर महाराष्ट्र और गुजरात में मीठे और मसालेदार स्वाद का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह विविधता सिर्फ खाना पकाने के तरीकों में ही नहीं, बल्कि खाद्य सामग्रियों में भी देखी जाती है। जैसे, पश्चिमी तट पर नारियल और मछली का प्रमुख स्थान है, वहीं पंजाब और राजस्थान के व्यंजन ताजगी और मसालों से भरपूर होते हैं। यहाँ का खाना हर किसी के स्वाद को संतुष्ट करने की क्षमता रखता है, चाहे वह तीखा हो, खट्टा, मीठा या फिर चटपटा। भारत के व्यंजन केवल स्वाद ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी एक जीवित प्रमाण हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे हैं।

इसके अलावा, भारतीय खान-पान में आत्मीयता और अतिथियों की आवभगत का खास ध्यान रखा जाता है। चाहे घर हो या शादी-ब्याह की महफ़िल, हर भोजन में विशेष ध्यान और स्नेह की झलक मिलती है। इस विविधता और समृद्धि के कारण ही भारत में हर राज्य और क्षेत्र की अपनी अनोखी पहचान है।

आइए हम विभिन्न राज्यों के खास व्यंजनों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

1. जम्मू और कश्मीर:

1. रोगन जोश: यह एक लोकप्रिय गोश्त की डिश है, जिसमें मांस को लम्बे समय तक पकाया जाता है और उसे विशेष मसालों और चिकनी लाल रंग की तेल में पकाया जाता है। रोगन जोश एक प्रमुख गोश्तीय व्यंजन है जो जम्मू और कश्मीर की खास पहचान बन चुका है। यह व्यंजन मांस को धीरे आंच पर पकाकर तैयार किया जाता है।

रोगन जोश बनाने के लिए एक विशेष मसाले (स्पाइस मिक्सचर) का इस्तेमाल होता है जिसे "रोगन जोश मसाला" कहा जाता है। यह मसाला कश्मीरी लाल मिर्च, सौंफ, जीरा, धनिया, लौंग, इलायची, दालचीनी, दही, और तेल को एक साथ मिलाकर बनाया जाता है।

रोगन जोश का व्यंजन अक्सर साथ में नान या रोटी के साथ परोसा जाता है। इसका स्वाद और रंग इसे अनोखा बनाते हैं और इसे जम्मू-कश्मीर की खास खाद्य संस्कृति का प्रतीक माना जाता है।

इसके अलावा यखनी, कबरगा, दम आलू, फिरनी आदि जम्मू और कश्मीर के विशिष्ट व्यंजन हैं।

ये विशिष्ट व्यंजन उन्हीं में से कुछ हैं जो जम्मू और कश्मीर की खासियत को दर्शाते हैं। यहाँ भोजन को उनकी स्थानीय संस्कृति और प्राकृतिक स्थलों की विविधता को दिखाने में मदद करते हैं।

2. पंजाब:

1. सरसों दा साग और मक्के की रोटी: यह एक प्रमुख पंजाबी

डिश है जो सरसों के पत्ते और पालक को मिलाकर बनाया जाता है, जिसे मक्के की रोटी के साथ परोसा जाता है।

2. दाल मखनी: यह एक प्रसिद्ध दाल है जिसमें उड़द दाल और राजमा को मिलाकर मक्खन और मलाई के साथ बनाया जाता है।

3. छोले भटूरे: छोले भटूरे पंजाब के साथ साथ उत्तर भारत का एक लोकप्रिय व्यंजन है, जिसे खासकर नाश्ते या दोपहर के खाने में बड़े चाव से खाया जाता है। छोला मसालेदार सफेद चने की सब्जी होता है, जो टमाटर, प्याज़ और विशेष मसालों से बनाया जाता है, जबकि भटूरा फूला हुआ, खमीर वाले तले हुए पूरी जैसा होता है। इनका संगम इतना लाजवाब होता है कि हर बाइट में स्वाद और ताजगी का अहसास होता है। अक्सर इसे कटे हुए प्याज़, अचार और दही के साथ परोसा जाता है, जो इसके स्वाद को और भी निखारते हैं।

4. पनीर टिक्का: पनीर के टुकड़े जिन्हे मसालों में मिलाकर तैयार किया जाता है और तंदूर में सेका जाता है।

5. लस्सी: यह एक प्रमुख पंजाबी ड्रिंक है जो दही से बनती है।

3. पश्चिम बंगाल:

कोशा मांशो को बंगाली मटन करी भी कहा जाता है और यह अपने स्वादिष्ट रसदार मटन के टुकड़ों और गर्म मसालों के विभिन्न स्वादों के कारण सबसे लोकप्रिय बंगाली व्यंजनों में से एक है। कोषा शब्द का अर्थ है गाढ़ी, मसालेदार ग्रेवी। इसे धीमी आंच पर सरसों के तेल में धीरे-धीरे पकाया जाता है। आपने अक्सर सुना होगा कि बंगाली लोग मछली के व्यंजन पसंद करते हैं लेकिन इसके अलावा कोशा मांशो सबसे लोकप्रिय बंगाली मटन करी में से एक है जो अपने विदेशी स्वाद और तीखेपन के लिए लोकप्रिय है। इन सबके अलावा पश्चिम बंगाल अपने मिष्ठानों के लिए जाना जाता है और अपने देश की एक प्रमुख मिठाई रसगुल्ला (जिसे वहा रोसोगोल्ला के नाम से जाना जाता है) का जनक है, साथ ही साथ शौन्देश एवं अन्य मिठाइयों के लिए भी प्रमुखता से जाना जाता है।

4. महाराष्ट्र:

आपने अक्सर सुना होगा कि मराठी लोगों को वड़ा पाव बहुत पसंद है, लेकिन इसके अलावा सबसे लोकप्रिय सर्वकालिक पसंदीदा मराठी व्यंजनों में से एक मिसल पाव है। यह एक प्रकार की मराठी करी है जिसमें अंकुरित अनाज, ऊपर से प्याज और फरसाण डाला जाता है और इसे पाव (भारतीय डिनर रोल) के साथ परोसा जाता है। यह स्वादिष्ट कोल्हापुरी व्यंजन अत्यधिक मसालेदार और तीखा होता है।

5. असम:

असम के खाने की पहचान उनकी स्थानीय स्वादिष्टता और विविधता पर होता है। असम में मछली को भोजन के रूप में प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ पर बहुत से प्रकार की मछलिया बनाई जाती हैं जैसे कि माछर तोकारी, माछर जोल, माछर पिटिका आदि।

औंदिया: इसे असमिया थाली भी कहा जाता है। यह असम के भोजन का एक विशेष रूप है। इसमें भात, दाल, सब्जियाँ, मांस या माछ, और अनेक तरह की चटनियाँ शामिल होती हैं।

आलू पिटिका: यह एक असम के लोगों का प्रिय व्यंजन है जिसमें उबले आलू को मसालों और तेल के साथ मिलाकर बनाया जाता है।

पिठा: यह असम की प्रसिद्ध मिठाई है, जो चावल या दाल के आटे से बनती हैं और इसे गुड़ या नारियल के साथ परोसा जाता है।

लासी: यह असमी छाछ होती है जिसे दही से बनाया जाता है और इसे विभिन्न मसालों के साथ अलग-अलग तरीके से परोसा जाता है।

इसके अलावा "पपीता खर" असम का एक प्रमुख व्यंजन है जो वहाँ की संस्कृति और भोजन पर गहरा प्रभाव डालता है। यह एक प्रकार की चटनी होती है जिसे पपीते से बनाया जाता है। पपीता खर मुख्य रूप से पपीते, मिर्च, नमक, तेल और मसालों से बनाया जाता है। इसका स्वाद तीखा और खट्टा होता है। यह असमी भोजन के साथ बहुत प्रिय और पसंदीदा व्यंजन है जो भोजन को और भी स्वादिष्ट बनाता है।

6. तमिलनाडु

तमिलनाडु के व्यंजनों का स्वाद उनके खास मसालों और व्यंजनों को तैयार करने के विभिन्न तकनीकों में छुपा होता है।

तमिलनाडु का प्रमुख प्रसिद्ध व्यंजन रसम है जो दक्षिण भारतीय रसों में से एक है। यह एक तरह के तेल में पकाया जाने वाला सूप होता है, जिसमें तमिलनाडु के विशेष मसाले और स्वाद का विशेष अनुभव होता है।

रसम को तमिलनाडु के उत्तर प्रांतों में अक्सर विशेष अवसरों पर बनाया जाता है, जैसे कि शादियों, उत्सवों या विशेष पूजाओं में। यह व्यंजन दाल, टमाटर, खास मसालों, तड़के, तेल और धनिया के पत्तों से बनता है। रसम को चावल के साथ परोसा जाता है और कई बार इसे इडली, डोसा या उत्तपम के साथ भी सर्व किया जाता है। इसके अलावा चेट्टिनाड करी, पूतू, पायसम एवं पूरन पोली तमिलनाडु के

विशिष्ट व्यंजनों में शुमार है।

7. बिहार

बिहार के व्यंजन, भारत के जायका की विविधता और स्वाद में अपना खास महत्त्व रखते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख बिहारी व्यंजन हैं:

लिट्टी-चोखा: यह बिहार का प्रसिद्ध व्यंजन है, जिसमें लिट्टी और चोखा दोनों होते हैं। लिट्टी गोल होते हैं, जो आटे एवं चने के सत्तू से बनाए जाते हैं और उन्हें कोयले अथवा उपला/लकड़ी के आग पर सेक कर पकाया जाता है। चोखा में टमाटर, बैंगन, प्याज़ और मसालों का मिश्रण होता है।

सत्तू: सत्तू बिहार का प्रमुख खाद्य पदार्थ है, जो भूने हुए चने के आटे से बनता है। इसे ठंडे पानी में मिलाकर पीया जाता है या लिट्टी में भर के भी खाया जाता है।

खुबानी का शरबत: बिहार में गर्मी में यह शरबत बनाने के लिए खुबानी (अप्रिकॉट) का प्रयोग किया जाता है।

मखाना: बिहार में मखाना की कई सजीव व्यापारिक कटिंग होती है। यह फ्राइ या रोस्ट करके खाया जाता है और इसे कई स्वादिष्ट नमकीनों और मिठाइयों में भी शामिल किया जाता है।

छाछ: बिहार में छाछ या बटरमिल्क भी लोकप्रिय है। यह गर्मी में ठंडा करने वाला और पौष्टिक पेय होता है।

पिट्टा: बिहार में पिट्टा भी प्रसिद्ध है, जो चावल के आटे से बनता है और विभिन्न स्वादों में जैसे नमकीन या मीठा में उपलब्ध होता है।

बिहारी व्यंजनों में स्थानीय स्वाद और परंपरागत तरीके से बनाने का खास तरीका होता है। इन व्यंजनों का स्वाद उनके खास तरीकों में छुपा होता है, जो उन्हें विशेष बनाता है।

8. आन्ध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के खाद्य संस्कृति में विविधता और स्वाद का बहुत ही खास स्थान है। यहां आंध्र प्रदेश के कुछ प्रमुख व्यंजन के बारे में वर्णन है जो आंध्र प्रदेश की पारंपरिक खासियत को दर्शाते हैं:

गोंगूर चिकेन: गोंगूर पत्ती से बना यह चिकेन व्यंजन आंध्र प्रदेश में प्रसिद्ध है, जिसमें गोंगूर के तीखे पत्ते, चिकेन, और मसालों का मिश्रण होता है।

कोडी पुलाव: यह आंध्र प्रदेश का प्रसिद्ध चिकेन पुलाव है जो मसालों, धनिया, प्याज़, और चिकेन के साथ पकाया जाता है।

आवकाय: यह आम का अचार होता है जिसे आंध्र प्रदेश में खूब पसंद किया जाता है।

उपमा : यह रवा और सब्जियों का मिश्रण होता है, जिसे नाश्ते के रूप में या साइड डिश के तौर पर सर्व किया जाता है।

पेसारट्टु: यह एक प्रकार का दाल का डोसा होता है, जो मूंग दाल से बनता है और इसे सांभर या चटनी के साथ परोसा जाता है।

बोब्बट्टु: यह आंध्र प्रदेश का मीठा पकवान है, जो दाल और गुड़ से बना मिश्रण होता है और यह मीठी रोटी की तरह होता है।

9. तेलंगाना

बिरयानी एक सदाबहार क्लासिक व्यंजन है जिसे वास्तव में किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है एवं यह शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों तरह के लोगों के लिए अलग - अलग तरीके से बनाया जाता है।

अगर बात बिरयानी की हो तो हम हैदराबादी बिरयानी को कैसे भूल सकते हैं? मसालों के सुगंधित स्वाद और केसर के अच्छे रंग के कारण यह तेलंगाना में सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक है। हैदराबादी बिरयानी की मूल सामग्री बासमती चावल, मटन या चिकन, दही, तली हुई प्याज और भारतीय मसाले हैं। यह बिरयानी अपने क्लासिक स्वाद और शाही स्वाद के कारण न केवल हैदराबाद में बल्कि पूरे देश में लोकप्रिय है।

इसके आगे अगले अंक में जारी रहेगा.....

कविता

सच और झूठ



श्री शशि किशोर राम

तुम झूठ का पुलिंदा हो,
हम सच थे इसलिए बिखर गए
इस कलयुगी दौर में
सब नीति वाक्य बदल गए
पहले तो सत्य परेशान हुआ करता था
पर पराजित कभी न हुआ
अब तो यह दोनों छोर पर बिखर गए
जो चले थे सारी दुनिया को जीतने
देखो हार कर वे स्वयं से, लौट अपने शहर गए
उन्हें समझाने निकले थे बड़े मन से
उन्हें रबर कराने निकले थे बड़े मन से
कुछ परिणाम न निकला, सारे प्रयत्न मेरे बेअसर गए
तुझे भुलाने को न जाने कितने जपनाम किए ,
जाम पर जाम पिए
इन जाम और जपनाम में न जाने कितने पहर गए।

जीवन दर्शन



श्री शशि किशोर राम

मैं तेरी दुनिया में आया
तुझे देखा और जिया
मेरे सामने कई लोग आए और गए
अब समय आ गया है
मेरे चलने का,

इस अल्प जीवन काल में
कुछ छोटी-मोटी सफलताएँ पाई
अनगिनत आलोचनाएँ झेली
किसी की मुस्कान बना कुछ समय
तो कुछ समय तक तकलीफों का कारण
और भी खड़े हैं कतार में, रास्ता देख रहे हैं
आगे बढ़ने का, कुछ नया करने का,
समय आ गया है
मेरे चलने का ।

तुझसे चुराकर तेरी यादें ले जा रहा हूँ
कुछ मेरे साथ की और कुछ
वो बातें जो तुमने कहीं थी कभी भावावेश में
आगे का अनदेखा भविष्य छोड़े जा रहा हूँ
नये यादों के सृजन का
अब समय आ गया है मेरे चलने का ।

लघु कविताएँ



श्री शशि किशोर राम

(1)

टूट कर चाहा था किसी को
फिर एक बार टूटना चाहता हूँ
प्रेम के सागर में डूब चुका था कभी
फिर एक बार गहरे उतरना चाहता हूँ
मैं तो हूँ यहाँ, समुद्र भी विशाल है
पर न तो किसी की आवाज़ है
न किसी की पुकार है
बस इंतज़ार है
वैसी किसी आवाज़ का, वैसी ही पुकार का
बस इंतज़ार है
इंतज़ार है

(2)

यह कौन रो रहा है कि इतनी बरसात हो रही
किसके केश खुले हैं कि घनी रात हो रही
हवा में किसकी आह है छिपी कि
रोम रोम जाग उठे
बादलों की गर्जन में किसकी पुकार गूँज रही
बिजली चमक रही है कि
तुम पलके झपक रही हो
पेड़ों के झुरमुट के बीच
कहीं से तुम देख रही हो
मौसम का असर है या तेरी यादों का कहर है
तुम हो यहीं या कहीं दूर रो रही हो
नज़रें जहाँ तक जा रही हैं तुमको ढूँढ़ रहा हूँ
तेरे नाम पुकारने के वास्ते खड़ा हूँ
तेरे नाम पुकारने के वास्ते खड़ा हूँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की कुछ झलकियां



कार्यक्रम में उपस्थित प्रधान निदेशक महोदय श्री वी. एम. वी. नवल किशोर (बाएं)



मंचासीन प्रधान निदेशक श्री वी. एम. वी. नवल किशोर, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्रीमती पी. माधवी, मुख्य अतिथि श्रीमती परिमाला हाना नूतन आई. पी. एस. एवं महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा (बाएं से दाएं)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की कुछ झलकियां



मुख्य अतिथि श्रीमती परिमाला हाना नूतन, आई. पी. एस. (दाएं) को मेमेंटो भेंट करते हुए प्रधान निदेशक श्री वी. एम. वी. नवल किशोर(बाएं) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्रीमती पी. माधवी (मध्य)



मुख्य अतिथि श्रीमती परिमाला हाना नूतन, आई. पी. एस. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025 के अवसर पर केक काटते हुए

हौसले



श्री विवेक कुमार सिंह

अरमानों के पंखों पे अब,
हौसलों की सवारी है।
बहुत आराम कर लिया तूने,
अब तेरे थकने की बारी है।
शेर है तू अब उठ जा,
अब तेरे दौड़ने की बारी है।
माना गर्दिशें बहुत थी,
पर तूने भी कहाँ हार मानी है।

उठ जा ओ मंजिल के मुसाफिर
बस थोड़ी और मेहनत कर
फिर यह शानदार मंजिल बस तुम्हारी है।
हार के भी कोशिश करना मत छोड़
इरादा पक्का कर हौसला ना तोड़
अब तो तेरे उड़ने की बारी है।

मुश्किलें भी तोड़ ना सकी
ना कभी गमों ने हराया है।
थोड़ी और हिम्मत कर,
फिर समझना तू इस जहान का सितारा है।

अपने हौसलों को कभी गिरने ना देना
अपने इरादों को कभी मरने ना देना
अब तो तेरे सपने भी होंगे सच
अब तेरे सँवरने की बारी है।

हर रास्ते में ठोकरें मिली

अब बिन ठोकरों के चलने की बारी है।
बहुत संघर्ष कर लिया तूने
अब कामयाबी छीनने की बारी है।
दृढ़ निश्चय कर, संकल्पित हो, जमीर की
पहचान कर
अब खुद को साबित करने की बारी है।
माना आँधियाँ बहुत आईं
पर तूने भी कब अपनी जगह छोड़ी है।

अब तो तेरे सपने भी होंगे सच
अब तेरे सँवरने की बारी है.....
अरमानों के पंखों पे अब,
हौसलों की सवारी है।
बहुत आराम कर लिया तूने,
अब तेरे थकने की बारी है।
शेर है तू अब उठ जा,
अब तेरे दौड़ने की बारी है।
माना गर्दिशें बहुत थी,
पर तूने भी कहाँ हार मानी है।

उठ जा ओ मंजिल के मुसाफिर
बस थोड़ी और मेहनत कर
फिर यह शानदार मंजिल बस तुम्हारी है।
हार के भी कोशिश करना मत छोड़
इरादा पक्का कर हौसला ना तोड़
अब तो तेरे उड़ने की बारी है।

'प्रत्युषा' के प्रथम अंक के संबंध में प्राप्त प्रतिक्रियाएं

स्पीड फ़ैक्स

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General
(Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

पत्रांक-वि.अ./ले.प./प्रतिभाव-3/60/2024-25/157

दिनांक-31.02.2025

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक,
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा व कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर, सैफाबाद, हैदराबाद
500004

विषय : अर्धवार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका 'प्रत्युषा' के प्रथम अंक के प्रतिभाव से संबंधित।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रत्युषा' के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। सर्वप्रथम, कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त संपादक मंडल तथा पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। पत्रिका में समाहित समस्त रचनाएँ रुचिकर एवं जानकारीपूर्ण हैं।

श्री संदीप सिंह जी की 'गांधी तथा उनके बारे में भावितियाँ' काफी जानकारीपूर्ण हैं। इसके अलावा अन्य रचनाएँ जैसे-श्री जी.चंद्रशेखर जी की 'तीन दोस्तों की केरल की सैर', श्री अर्जुन दास जी की 'भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था', श्री संदीप करपय जी की 'तमन्ना' तथा श्री जी.एम.एम.चिन्ता जी की 'मोतियों वह शहर हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत और सौंदर्य' आदि भी प्रशंसनीय हैं।

इसी प्रकार कवितायुक्त दुनिया में श्री शशि किशोर राम जी की 'एक समय के बाद' तथा सुश्री लिपि उज्जैनिया जी की 'स्वर्ण' भी रुचिकर लगी।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
MANOJ KUMAR NO. 1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

Digitally signed by
Manoj Kumar
Date: 17-02-2025
12:34:57

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),
पश्चिम बंगाल

सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल),
सीएफ-ब्लॉक, सेक्टर-1
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL, AUDIT (II),
WEST BENGAL

CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-
BLOCK, SECTOR-1
SALT LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

दिनांक- 19.02.25

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर, सैफाबाद,
हैदराबाद-500004

To,
The Senior Audit Officer/Administration
Office of The Principal Director of Commercial Audit,
A.G Office Complex, Saifabad, Hyderabad-500004

विषय: कार्यालय की अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रत्युषा' के प्रथम संस्करण 2024अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'प्रत्युषा' के प्रथम संस्करण 2024 अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित प्रकाशित अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। अतिरिक्त और लेख भी भावपूर्ण, साधक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो है- बाल विवाह, कमरा, एक समय के बाद, तीन दोस्तों की केरल की सैर, भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था, तलाश तथा तमन्ना आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,
सहायक निदेशक (राजभाषा) / हिन्दी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916 FAX: (033) 2334-7854 E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, रीटवड-33-बी,
दक्षिण मार्ग, पानीपत-160 020

OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

दिनांक/Date: 06.02.2025

संख्या: हिन्दी कक्षा/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/399

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्र.)
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर,
सैफाबाद, हैदराबाद-500004

विषय - अर्ध-वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रत्युषा' के पहले संस्करण 2024 की प्रति प्रेषित किये जाने के संबंध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय की अर्ध-वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रत्युषा' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय और रुचिकर हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हिन्दी अधिकारी
(हिन्दी कक्षा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017

फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email: agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-वि.क./हिन्दीपत्रिका/समीक्षा/2024-25/4/883522/2025 दिनांक: 19-02-2025

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्र.)
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
सैफाबाद, हैदराबाद-500004

विषय:- अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रत्युषा' के पहले संस्करण 2024 की समीक्षा।
महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित 'प्रत्युषा' के पहले संस्करण 2024 की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्रीमती पी. पद्मावती की 'श्रीअन्न', श्री अजीत कुमार झा की 'हिन्दी एक खोज' एवं श्री शशि किशोर राम की 'एक समय के बाद' आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय

EKTA
(हिन्दी अधिकारी)

'प्रत्युषा' के प्रथम अंक के संबंध में प्राप्त प्रतिक्रियाएं

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं.प्र.म.ले. (ले.व.ह.)/प्र.प./हि.प्र.क./पत्रिका समीक्षा/2024-25/276 दिनांक-19-02-2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्र.)
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर,
सैफाबाद, हैदराबाद-500004

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "प्रत्युषा" के पहले संस्करण 2024 की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "प्रत्युषा" के पहले संस्करण 2024 की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं जानकारीपूर्ण हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिचार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय,
Phool Singh PHOOL SINGH
Date: 19-02-2025
11:54:21
HINDI OFFICER

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला- 171 003 दूरभाष : 0177-2614935, फैक्स : 0177-2814934
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2614935, Fax: 0177-2814934
E-mail: agahimachalpradesh@ca.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्षा/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/399 दिनांक/Dated: 6-02.2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्र.)
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर,
सैफाबाद, हैदराबाद-500004

विषय - अर्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रत्युषा" के पहले संस्करण 2024 की प्रति प्रेषित किये जाने के संबंध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय की अर्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रत्युषा" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्षा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),
पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिर),
डीएफ-ब्लॉक, सेक्टर-1
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL, AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-
BLOCK, SECTOR-1
SALT LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

Supreme Audit Institution of India
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या:- हिंदी कक्षा/पत्रिका पावती/178
No. - H.C/P. P/
सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर, सैफाबाद,
हैदराबाद-500004
To,
The Senior Audit Officer/Administration
Office of The Principal Director of Commercial Audit,
A.G Office Complex, Saifabad, Hyderabad-500004

विषय: कार्यालय की अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रत्युषा' के प्रथम संस्करण 2024 अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'प्रत्युषा' के प्रथम संस्करण 2024 अंक के ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी हैं- बाल विवाह, कमरा, एक समय के बाद, तीन दोस्तों की केरल की सैर, भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था, तलाश तथा तमना आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
सहायक निदेशक (राजभाषा) / हिंदी कक्षा

Phone: (033) 2337-4916 FAX: (033) 2334-7854 E-mail: agauwestbengal2@ca.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
वरिष्ठ प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार
वीरचंद्र पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General
(Audit) Bihar
Birchard Patel Marg, Patna-800001

पत्रिका-हि.अ./ले.प./प्रतिभाव-3/60/2024-25/137 दिनांक-31.02.2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक,
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर, सैफाबाद, हैदराबाद
500004

विषय : अर्धवार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "प्रत्युषा" के प्रथम अंक के प्रतिभाव से संबंधित।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "प्रत्युषा" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई एतदर्थ धन्यवाद। सर्वप्रथम, कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त संपादक मंडल तथा पत्रिका परिचार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। पत्रिका में समाहित समस्त रचनाएं रुचिकर एवं जानकारीपूर्ण हैं।

श्री संदीप सिंह जी की "गांधी तथा उनके बारे में झलियाँ" का भी ज्ञानवर्धक है। इसके अलावा अन्य रचनाएं जैसे-श्री जी.धंदेश्वर जी की "तीन दोस्तों की केरल की सैर", श्री अर्जुन दास जी की "भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था", श्री संदीप कश्यप जी की "तमन्ना" तथा श्री जी.एम.एम.चिन्ती जी की "मोतियों का शहर हैदराबाद की सांस्कृतिक विरासत और सौंदर्य" आदि भी प्रशंसनीय हैं।

इसी प्रकार कथितो दुनिया में श्री शशि किशोर राम जी की "एक समय के बाद" तथा सुश्री विधि उज्जैनिया जी की "स्वर्ध" भी रुचिकर लगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,
MANOJ KUMAR NO. 1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी



कलाकार - श्रीमती रचना गुप्ता, स.लेप.अ.

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
का कार्यालय, हैदराबाद